दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 25.08.2022

प्रकाशनार्थ

दिनांक 25.08.2022 गोरखपुर। **महायोगी गुरू श्री गोरक्षनाथ की तपोभूमि पर ज्ञान, विज्ञान व समरसता की गंगा बहाने वाले युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी की स्मृति में आयोजित व्याख्यान माला के उद्घाटन अवसर पर ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति और हमारी ज्ञान विरासत'' विषय पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. राजेश सिंह, कुलपति, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर** ने कहा कि विश्वविद्यालय अपने सम्बद्ध महाविद्यालयों के नाम से भी जाना जाता है। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध 350 महाविद्यालयों में दिग्विजयनाथ पी. जी.कालेज, गोरखपुर हमेशा नं. 1 पर रहा है। महन्त दिग्विजयनाथ जी मात्र संत ही नही बल्कि शिक्षा के प्रति समर्पित, कुशल राजनीतिज्ञ एवं सामाजिक सरोकारों के प्रति अग्रणी रहे है। विश्वविद्यालय ने इस महाविद्यालय से भौतिक और सांस्कृतिक विरासत को प्राप्त किया है। विश्वविद्यालय की स्थापना महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् और महन्त दिग्विजयनाथ जी का विशेष योगदान रहा है।

शिक्षा में ज्ञान के साथ मार्केट आधारित प्लानिंग भी होनी चाहिए। सभी विद्यार्थी अपने लक्ष्य निर्धारित करें और उस दिशा में प्रयास करें तभी हम वर्तमान चुनौतियों के साथ खुद को स्थापित कर सकेंगे। नई शिक्षा नीति में दिग्विजयनाथ जी के विचारों के साथ हम बेहतर कार्य कर सकें, यही उस युगपुरुष के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली होगी। महाविद्यालय अपने संस्थापकों के सामाजिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक जीवन पर आधारित पाठ्यक्रम बनायें जिसे अपने यहां लागू करें और विश्वविद्यालय में भी भेंजे, जिसमें आगे विद्यार्थियों से फीडबैक प्राप्त किया जाय।

अपने उद्बोधन में उन्होंने भारतीय के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं के अध्यन पर ही बल दिया तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मंशा के अनुरूप शिक्षण में तकनीकी के प्रयोग एवं शोध अभिगम के साथ नवाचार को बढ़ावा देने की बात कही। बदलते परिवेश के साथ हमें अपनी सोच बदलनी होगी। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत 170 क्रेडिट का कोर्स जो लाया जा रहा था उसे व्यावहारिक रूप में लागू करने में दिक्कतों के मद्देनजर उसे संशोधित करते हुए अब 24 क्रेडिट प्रति सेमेस्टर के कोर्स को लागू किया गया है। कोर्स बनाते हुए क्रेडिट लोड के बारे में भी विचार करना चाहिए। दुनिया के 10 सर्वोत्कृष्ट विश्वविद्यालयों को देखते हुए उनके स्तरीय स्तर का बनने का स्वयं भी प्रयास करना होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि शिक्षा, संस्कृति व राष्ट्रीयता की त्रिवेणी के संकल्प के साथ स्थापित यह महाविद्यालय अपने भगीरथ महन्त दिग्विजयनाथ जी की स्मृति के उपलक्ष्य में व्याख्यानमाला का आयोजन कर रहा है। शैक्षिक मरूभूमि में ज्ञान गंगा प्रवाहित करने के लिए आधुनिक भगीरथ महन्त दिग्विजयनाथ जी ने शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक विकास के लिए व्यक्ति केन्द्रित शिक्षा पर बल दिया, जिससे जीवन संग्राम में सफल होने के लिए नागरिक तैयार हों, उस दिशा में महाविद्यालय निरन्तर प्रयासरत है। हमें अपनी कल्पना के साथ अपने स्वप्नों को सजोकर रखना होगा। और वास्तव में स्वप्न वही हैं जो लक्ष्य पूरा हुए बिना हमें सोने नही देते । वर्तमान में सरकारी नौकरिया कम हैं और प्रत्याशिता अधिक है, ऐसी स्थिति में बड़ी कठिन प्रतिस्पर्द्धा हैं, जिसमें खुद को प्रतिस्थापित करना होगा। शिक्षा में मूल्यों को समावेश हो हमें ऐसा प्रयास करना होगा। हम अपने संस्थापक महन्त दिग्विजयनाथ जी, महन्त अवेद्यनाथ और गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी पर आधारित कोर्स का निर्माण करेंगे और उसे विश्वविद्यालय को अनुमोदन के लिए भेजेंगे। शैक्षणिक संस्थाओं में समरसता का भाव होना चाहिए। **समता, ममता व समरसता हमारे सामाजिक मूल्य है** जिन्हें बनाये रखने का प्रयास करना होगा।

कार्यक्रम का आभार ज्ञापन डॉ. गीता सिंह, प्रभारी, बी.एड. विभाग एवं संचालन डॉ. सत्यपाल सिंह, संयोजक, व्याख्यान माला ने किया। इस कार्यक्रम में प्रो. परीक्षित सिंह, प्रो. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. सत्येन्द्र प्रताप सिंह, डॉ. शुभ्रा श्रीवास्तव, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. निधि राय, डॉ. विभा सिंह, डॉ. सुभाष चन्द्र, श्री अनिल भाष्कर, श्री इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. आर.पी.यादव, श्री पीयूष सिंह, डॉ. शैलेश सिंह, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. श्याम सिंह, श्री जितेन्द्र कुमार पाण्डेय, श्री विवेकानन्द, डॉ. नीतिश शुक्ला, श्री रविन्द्र नाथ सहित महाविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

डॉ.(सुनील कुमार सिंह)
सह-प्रभारी
सूचना एवं जनसम्पर्क